

इतिहास 11/7/16

इफको की टीम ने वन अनुसंधान संस्थान का दौरा किया

देहरादून ३० जून (एजेसी). डॉ. यूएस अवस्थी, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी इफको ने अपने उच्च अधिकारियों की टीम के साथ वानिकी क्षेत्र के अंतर्गत साझा अनुसंधान कार्यक्रम की संभावना तलाशने हेतु ३० जून, २०१६ को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया। डॉ. सविता, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान ने डॉ. अवस्थी व उनकी टीम का स्वागत किया और उन्हें उर्वरकों के अनुप्रयोग, ड्रिप सिंचाई, फार्म वानिकी इत्यादि के जरिए भारतीय कृषि को आकार देने में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप की संज्ञा दी। उन्होंने 'भूमि बचाओ' अभियान में भी उनकी भूमिका की सराहना की, जिसका उपजाऊ मिट्टी हेतु आज आम जनता के मस्तिष्क में गहरा प्रभाव पड़ा है। डॉ. सविता ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के साथ नजदीकी सहयोग में नीम के बहुगुणितों के विकास

पर एक परियोजना निधिकृत करने के लिए इफको का धन्यवाद किया। इसके बाद इस परियोजना के वैज्ञानिक एवं समन्वयक डॉ. अशोक कुमार ने एक विस्तृत प्रस्तुतिकरण तैयार किया तथा अभी तक की गई उन्नति के बारे में अवगत कराया और सूचित किया कि वन अनुसंधान संस्थान एवं शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक वृद्धि एवं उत्पादन बढ़ाने की दिशा में पोलीप्रोइडस विकसित करने हेतु बहुत सी सामंजस्यपूर्ण कार्य कर रहे हैं। एक अति विशिष्ट एवं वैज्ञानिक कार्य के अंतर्गत पोलीप्रोइडस उत्पन्न करने के विविध उपचार अनुप्रयुक्त किए जा रहे हैं। सूचित किया गया था कि वन अनुसंधान संस्थान ने लाखों पौधों को उगाने हेतु नीम के १०० किलो गुणकारी बीजों की आपूर्ति के लिए अपने आनुवंशिक संसाधनों का उपयोग किया है। डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि वन अनुसंधान संस्थान

ने एक अलग कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष आईएफएफडीसी को मॉरिशस के २.७५ लाख गुणकारी पौधों की आपूर्ति की है, जो पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में फार्म वानिकी के पौध रोपण करने हेतु इफको की सहायक है। इससे पहले वन अनुसंधान संस्थान ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के मुल्तानपुर जिले में क्षारीय मृदा के ४०,००० हेक्टेयर भूमि को कृषि योग्य बनाने में इफको के सहयोग में भी कार्य किया है। भविष्य में इफको के वनीकरण कार्यक्रम में खास की भूमिका पर भी बल दिया गया है। इस अवसर पर श्री योगेंद्र कुमार, महप्रबंधक, इफको ने वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की और इच्छा जताई कि नीम को एक उत्पादित सैख्या स्थापित की जा सकेगी जो भारत में नीम की खेती के परिदृश्य को परिवर्तित कर देगा। डॉ. अवस्थी ने कहा कि पहले ऑस्ट्रेलिया में नीम के

पोलिप्रोइडस विकसित करने का योजना थी लेकिन यह बहुत अधिक संतुष्टि की बात है कि वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने यह कठिन चुनौती अपने हाथों में ली है और अच्छी उन्नति भी कर रहे हैं। उन्होंने इस कार्य के साथ-साथ अन्य कार्यों के लिए वन अनुसंधान संस्थान व वैज्ञानिकों का पूरा सहयोग देने का भी भरसा दिया। डॉ. अवस्थी ने अन्य अनुसंधान कार्यक्रमों जैसे हरित रेलवे कार्यक्रम, जिसके अंतर्गत भारतीय रेलवे इसके बेकार भूमि तथा रेलवे ट्रैक के किनारे वनीकरण की योजना बना रही है, में अपना सहयोग बढ़ाया। उन्होंने ब्लॉक एवं ट्रैक पौधरोपण के लिए उचित प्रजातियों के चयन, भारत में विशेष मृदा प्रकार की प्रजातियों, गुणकारी पौधरोपण भण्डारों की आपूर्ति करने इत्यादि में परामर्शदाता के रूप में वन अनुसंधान संस्थान की अत्यधिक भूमिका की इच्छा जताई।

The Pioneer 01/07/16 - P. 16

IFFCO for research tie-up with Doon's forest institute

PNS ■ DEHRADUN

A team of officials led by the managing director and Chief Executive Officer of Indian Farmers Fertiliser Cooperative Limited (IFFCO), US Awasthi, visited the Forest Research Institute here on Thursday to explore possibility of collaborative research programmes with the institute under forestry sector.

Speaking on the occasion, Awasthi informed that earlier it was planned to develop poly-ploids of Neem in Australia but it is satisfying to learn that scientists of FRI have taken up this challenge and are progressing.

Awasthi also assured to facilitate all support to scientists and FRI for this and other works. He further extended support for other important research programmes like Greening Railways programme wherein the Indian Railways is planning to carry out afforestation on its idle-land as well as along the tracks.

The institute could play a better role as a consultant for selecting right species for block and track plantations, species for particular soil type across India, supplying quality planting stocks and other related issues.

Earlier, welcoming Awasthi and his team, the FRI director Savita extolled him as an important instrument in shaping Indian agriculture through application of fertilisers, drip irrigation and farm forestry among others. She further thanked



IFFCO for funding a project on development on poly-ploids of Neem in close collaboration with Arid Forest Research Institute, Jodhpur. Later, scientist and project coordinator Ashok Kumar made a detailed presentation informing about status of work progress stating that the scientists of FRI and AFRI have been working consistently to develop poly-ploids directing towards enhanced growth and productivity.

Various treatments have been applied to create poly-ploids under a very specialised and scientific job. The visiting team was further informed that the FRI had utilised its genetic resources on 100 kg quality seed of Neem to germinate lakhs of seedlings. Kumar said that under

a different programme, the institute had supplied about 2.75 lakh quality seedlings of Melia to IFFCO this year, which is a subsidiary of IFFCO, for farm forestry to carry out plantations in eastern Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Rajasthan. In the past too, the institute had collaborated with IFFCO to reclaim about 40,000 hectares of sodic soils in the district of Sultanpur in eastern Uttar Pradesh. The role of bamboos was also emphasised upon for future afforestation programme of IFFCO.

Speaking on the occasion, IFFCO general manager Yogendra Kumar expressed hope that a productive population of Neem could be developed which would change the scenario of

Neem cultivation in India.

It is pertinent to mention here that among other developments, in 2015 the FRI had signed a memorandum of understanding with IFFCO to work on a research and development project for developing species of Neem (*Azadirachta indica*) with enhanced seed and oil content apart from earlier maturity to provide increased quantity of Neem oil. The project was expected to fulfill the requirement to meet new directions of the Government of India to produce 100 per cent Neem coated urea only so that soil health could be maintained under environmental friendly manner to reduce requirement of urea that would also work as insect-pest repellent.